

पुरातत्व वीथिका में उत्तर प्रदेश के विभिन्न जनपदों मिर्जापुर, वाराणसी, इलाहाबाद, बांदा, हमीरपुर, झाँसी, ललितपुर, इटावा और मथुरा से प्राप्त पाषाणयुगीन अवशेष हैं। लगभग 2700 ई.पू. से 1500 ई.पू. के मध्य विकसित सिन्धु-सभ्यता के अवशेषों को भी इस वीथिका में प्रदर्शित किया गया है।

लगभग 1500 ई.पू. की ताम्रयुगीन कलाकृतियों का प्रदर्शन भी दर्शनीय है। इसमें कानपुर के शिवराजपुर से प्राप्त मानवाकृतियाँ एवं हार्पून, कुल्हाड़ियां विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इसके अतिरिक्त मृणमूर्तियों में मौर्यकाल एवं शुंगकाल की कलाकृतियों को भी प्रदर्शित किया गया है।

पुरातत्त्व वीथिका में प्रदर्शित पाषाण मूर्तियों में लगभग द्वितीय शती ई. की मथुरा से प्राप्त बलराम, महादेव बस्ती से प्राप्त अशोक स्तम्भ का शीर्षभाग एवं इलाहाबाद के भीटा से प्राप्त पंचमुखी अभिलिखित शिवलिंग विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण हैं। संग्रहालय में संग्रहीत अत्यधिक कौतूहलयुक्त मिश्र की ममी विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जिसे एक पृथक वीथिका का स्वरूप प्रदान करते हुए मिश्र की सभ्यता से सम्बन्धित अन्य कलाकृतियों का भी प्रदर्शन किया गया है।

अस्त्र-शस्त्र वीथिका में 16वीं शती ई. तक की विभिन्न कलाकृतियों को प्रदर्शित किया गया है, जिसमें धातु निर्मित तिब्बती लोक देवता यिदम, लोहे पर सोने के पॉलिश युक्त बुद्ध मस्तक, अकबर की अभिलिखित तलवार एवं तोप विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

मुद्रा वीथिका में लगभग आठवीं शती ई.पू. से लेकर द्वितीय शती ई.पू. तक के सिक्कों, आहत मुद्राओं को प्रदर्शित किया गया है। इसके साथ ही साथ इण्डोग्रीक सिक्के, शक-पहलव सिक्के, कुषाण कालीन सिक्के एवं गुप्तकालीन सिक्के सहित मुगल कालीन सिक्कों को भी प्रदर्शित किया गया है। वीथिका के अन्त में विभिन्न अवसरों पर प्रदान किए गए पदकों का भी प्रदर्शन रोचक ढंग से किया गया है।

प्राणिशास्त्र वीथिका में प्राणि जगत के जीवन-क्रम को रेखांकित



नवाब आसफ़-उद्-दौला, अवध शैली

करते हुए जन-साधारण को आकर्षित करने वाले जीव-जन्तुओं, विभिन्न प्रकार के पक्षियों को दर्शाया गया है, जिसमें राष्ट्रीय पशु बाघ अपने बच्चों के साथ खुले जंगल में प्रदर्शित है तथा बब्बर शेर द्वारा हिरन के शिकार का दृश्य विशेष रूप से दर्शकों के आकर्षण का केन्द्र है।

चित्रकला वीथिका में अवध तथा मुगल शैली के दृश्यों में युद्ध एवं दरबारी दृश्य तथा शबीहों का चित्रण हुआ है। इस वीथिका में तिब्बत एवं नेपाल से प्राप्त थंका चित्रकला भी प्रदर्शित है।

संग्रहालय में अवधकला वीथिका भी स्थापित है, जिसमें अवध के नवाबों तथा उनके द्वारा प्रयोग किये जाने वाले वस्त्र, पात्र, पूजा में प्रयुक्त सामग्री तथा दैनिक जीवन में प्रयोग किये जाने वाली वस्तुएं प्रदर्शित है।

संग्रहालय में छायाचित्र अनुभाग, अनुकृति अनुभाग तथा प्रकाशन अनुभाग भी हैं। संग्रहालय परिसर में अतिविशिष्ट रूसी विमान राजहंस-टी.यू.124 का भी प्रदर्शन किया गया है, जो सोवियत रूस द्वारा तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू को उपहार स्वरूप प्रदान किया गया था।

सुविधा

- संग्रहालय में प्रकाशन, छायाचित्र, प्राचीन कलाकृतियों की प्रतिकृतियां सस्ते मूल्य पर उपलब्ध हैं।
- शोध छात्रों को पुस्तकालय में निःशुल्क अध्ययन की सुविधा है।
- पूर्व सूचना पर छात्र दलों को संग्रहालय के सभागार में ऐतिहासिक एवं कला से सम्बन्धित वांछित जानकारी की निःशुल्क व्यवस्था है।
- स्कूलों से आये छात्र समूहों तथा प्रतिनिधि मण्डल एवं अन्य इच्छुक दर्शकों के लिए प्रदर्शक व्याख्याताओं द्वारा वीथिका व्याख्यान की निःशुल्क सुविधा।



नेमी के साथ होली खेलते कृष्ण, जयपुर शैली



राज्य संग्रहालय लखनऊ

उत्तर प्रदेश



सिंहनाद अवलोकितेश्वर

स्थानीय मानचित्र



लोह निर्मित स्वर्ण पॉलिश युक्त बुद्ध मस्तक

प्रवेश शुल्क

5 से 12 वर्ष तक की आयु के बच्चे : 5/- प्रति
12 वर्ष से अधिक आयु के भारतीय पर्यटक:12/-प्रति
विदेशी पर्यटक : 200/-प्रति
कैमरा शुल्क : 50/- प्रति
साप्ताहिक अवकाश : सोमवार
अन्य अवकाश : द्वितीय शनिवार के पश्चात् पड़ने वाला रविवार तथा अन्य सार्वजनिक अवकाश
भ्रमण समय : पूर्वाह्न 10:30 से अपराह्न 4:30 बजे तक



राज्य संग्रहालय, लखनऊ
बनारसी बाग, हज़रतगंज, लखनऊ-226001
फोन : 0522-2206157 / 2206158
ई-मेल : statemuseumlucknow@gmail.com

राज्य संग्रहालय, लखनऊ

राज्य संग्रहालय, लखनऊ की स्थापना उत्तर पश्चिम प्रान्त एवं अवध के लखनऊ डिवीज़न के कमिश्नर कर्नल एब्बोट द्वारा वर्ष 1863 में एक म्यूनिसिपल संग्रहालय के रूप में छोटी छत्तर मंजिल में की गई थी। राज्य के इस बहुउद्देशीय एवं प्राचीनतम संग्रहालय की गणना भारत के प्रमुख संग्रहालयों में की जाती है।

संग्रहालय के संग्रह को समृद्ध बनाने के उद्देश्य से वर्ष 1880 में म्यूनिसिपल संग्रहालय, इलाहाबाद से कुछ कलाकृतियां यहां लायी गयीं। सन् 1883 में इसे प्रान्तीय संग्रहालय घोषित किया गया एवं सन् 1884 में इस संग्रहालय को छोटी छत्तर मंजिल से लाल बारादरी के भव्य भवन में स्थानान्तरित किया गया। 30 मार्च, 1885 को संग्रहालय के प्रथम संग्रहालयाध्यक्ष के रूप में महान पुरातत्त्ववेत्ता डॉ. ए.ए. फ्यूहरर की नियुक्ति हुई, जिनकी देख-रेख में संग्रहालय के संकलन में



सप्तमातृका पट्ट

पर्याप्त वृद्धि हुई। राज्य संग्रहालय, लखनऊ के बनारसीबाग स्थित नवीन भवन का उद्घाटन माननीय प्रधानमंत्री प. जवाहर लाल नेहरू द्वारा वर्ष 1963 में किया गया। वर्तमान में संग्रहालय में निम्नवत संग्रह संग्रहीत हैं-प्राणिशास्त्र, पुरातत्त्व, मुद्राशास्त्र, सज्जाकला एवं कलात्मक वस्तुएं।

प्राणिशास्त्र संग्रह में दुर्लभ जीव-जन्तु, मानवशास्त्र, भूगर्भ विज्ञान एवं मिस्त्र की सभ्यता से सम्बन्धित कलाकृति/स्पेसिमेन संरक्षित हैं। अनुभाग में कौतुहल का मुख्य विषय मिस्त्र देश की 13 वर्ष की लड़की की एक ममी है। जिसके ताबूत पर उत्कीर्ण चित्रललिपि एवं ममी के बनाये



यमला-अर्जुन का उद्धार, कांगड़ा शैली



जैन सरस्वती



बंदूक, मध्यकाल

जाने की पद्धति (ममीफिकेशन) से यह अनुमान लगता है कि सम्भवतः किसी राज परिवार की रही होगी।

पुरातत्त्व संग्रह के अन्तर्गत प्रागैतिहासिक काल के औज़ार, जीवाश्म, मनके, मुहरें, ताम्र कालीन कलाकृतियां, मृणपात्र, विभिन्न काल की प्रस्तर एवं मृणमूर्तियाँ, शिलालेख, ताम्रपत्र आदि पुरावशेष सम्मिलित हैं। संग्रहालय के संकलन में हड़प्पा संस्कृति के कुछ अवशेषों की अनुकृतियाँ भी उपलब्ध हैं। पुरातात्विक उत्खननों से प्राप्त विभिन्न प्रकार के मृणपात्रों के नमूने यहाँ संग्रहीत हैं। संकलन में मनके एवं मथुरा के कंकाली टीला से प्राप्त कुषाणकालीन मूर्तियों का महत्वपूर्ण संग्रह संग्रहीत है। जैन, बौद्ध एवं हिन्दू देवी-देवताओं की दुर्लभ प्रस्तर प्रतिमाएं एवं मृणमूर्तियां संग्रहालय में संग्रहीत हैं, जिसमें मथुरा से प्राप्त आदमकद बोधिसत्व, मानकुंवर बुद्ध, श्रावस्ती से प्राप्त कुमारगुप्त द्वितीय के समय की अभिलिखित बुद्ध प्रतिमा एवं मथुरा से प्राप्त द्वितीय शताब्दी ई. का लाल चिल्लीदार बलुए पत्थर की बलराम की प्रतिमा विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

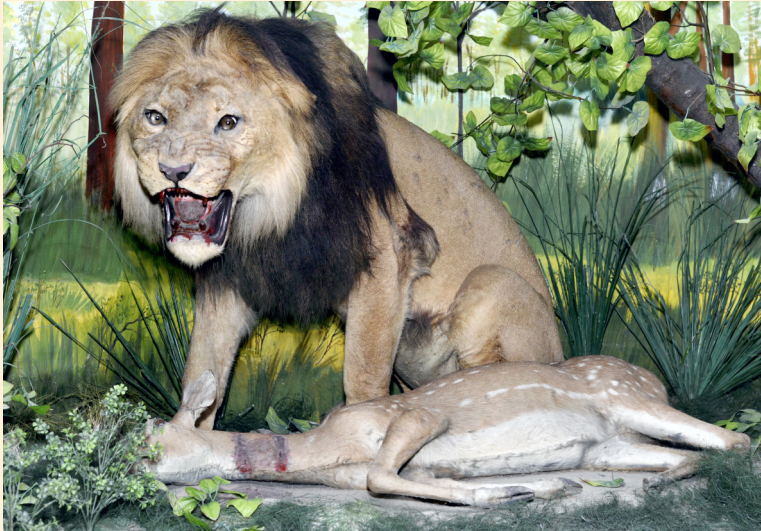


बहुमूल्य पत्थर से अलंकृत सिन्दूरदान

राज्य संग्रहालय, लखनऊ का मुद्रा संकलन अत्यन्त समृद्ध है, जिसमें समय-2 पर प्रदत्त भेंट, क्रय तथा निखात निधियों के माध्यम से संग्रह होता रहा है। वर्तमान में इस संकलन में भिन्न-भिन्न धातुओं के दुर्लभ व बहुमूल्य सिक्के संग्रहीत हैं। प्राचीन आहत सिक्कों के विविध प्रकार, दुर्लभ इण्डोग्रीक सिक्के एवं कुषाण कालीन सिक्कों का समृद्ध संग्रह इस संग्रहालय की शोभा बढ़ाता है। गुप्तकालीन स्वर्ण सिक्के, सम्राट हर्ष का ताम्र सिक्का, आदिवराह प्रकार का राजा भोज का स्वर्ण सिक्का आदि विशेष रूप से दृष्टव्य हैं। अकबर की मेहराबी मोहर के कई माप के नमूने संकलन में मौजूद हैं। विभिन्न प्रकार के पदकों का भी इस संकलन में एक विशिष्ट संग्रह है, जिसमें गाज़ि-उद्-दीन हैदर के राज्याभिषेक का पदक विशेष महत्व रखता है।

राज्य संग्रहालय के संकलन में अवध एवं अन्य क्षेत्रों के अस्त्र-शस्त्र, वाद्ययन्त्र, हाथीदांत, काष्ठ एवं धातु निर्मित कलाकृतियाँ, कलात्मक वस्तुएं, अवध क्षेत्र तथा भारत के अन्य भागों में प्रचलित परिधान आदि का अनूठा संग्रह है। इसके अतिरिक्त जामदानी तथा चिकनकारी के अत्यधिक प्राचीन नमूने भी यहाँ संग्रहीत हैं।

संग्रहालय में शोधार्थियों हेतु एक संदर्भ पुस्तकालय भी है, जिसमें कला, इतिहास, पुरातत्त्व, प्राणिशास्त्र, चित्रकला आदि विषयों पर आधारित दुर्लभ पुस्तकें



हिरन का शिकार करता बब्बर शेर



गाज़ि-उद्-दीन हैदर का राज्याभिषेक पदक

संग्रहीत हैं। देश के अन्य प्रतिष्ठित संग्रहालयों की भाँति राज्य संग्रहालय, लखनऊ में भी रसायनशाला अनुभाग, छायाचित्र अनुभाग, अनुकृति अनुभाग, संग्रहालय की अमूल्य धरोहरों पर आधारित प्रकाशन हेतु प्रकाशन अनुभाग एवं सोविनियर शॉप की स्थापना की गई है।

अनौपचारिक शिक्षा के माध्यम से इतिहास, कला एवं संस्कृति के ज्ञान को

जनमानस, शोधार्थियों एवं छात्र-छात्राओं तक पहुँचाने के लिये संग्रहालय सतत्

प्रयासरत् रहता है। इस हेतु राज्य संग्रहालय में वर्ष पर्यन्त विभिन्न विषयों पर

अधिकृत विद्वानों द्वारा व्याख्यान, समय-समय पर संगोष्ठी/विचारगोष्ठी,

कार्यशाला, डॉक्यूमेन्ट्री फिल्म एवं विविध प्रतियोगिताओं आदि का आयोजन किया

जाता है।

प्रदर्शन

राज्य संग्रहालय, लखनऊ में पुरातत्व, सज्जा कला, चित्रकला, काष्ठ कला, धातुकला, प्राणिशास्त्र, मुद्रा एवं ममी आदि पर आधारित वीथिकाएं स्थापित हैं।



मिस्त्र की ममी